स्कूल सुधार प्रायोजनाएं

State Institute Of Education, Chandigarh

March '69

-545501
379.15
CHA·S

— 595501
CHA-S

379.15
CHA-S

भूमिका

चौथी पंचवर्षीय योजना अप्रैल १९६६ से आरम्भ हो चुकी है। उसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा-स्तर को उन्नत करना है। यह उद्देश्य हम रूढ़ि-बद्ध रहकर प्राप्त नहीं कर सकते। इस के लिये हमें शिक्षा क्षेत्र में कुछ सुधारात्मक योजनाएं अपनानी होंगी—ऐसी योजनाएं जो कि प्रयोगात्मक व अभ्यासात्मक हों।

यह तो हमें ज्ञात है कि हमारी पाठशालाओं को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है परन्तु फिर भी हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे कई मुख्य-अध्यापक जो प्रशिक्षित है या जो आदर्शवादी हैं उनके लिए सम्भव हैं कि वह अपने स्कूलों में कुछ ऐसे नये प्रयोग व सुधार योजनाएं आरम्भ करें जिनसे वे अपनी पाठशालाओं में वैयक्तिकता, नवीनता तथा भिन्नता ला सकें। भिन्नता व नवीनता से हमारा अभिप्राय कुछ ऐसे नये प्रयोग करने से है जिनसे मुख्याध्यापक में आत्म गौरव की भावना उत्पन्न हो कि वह कुछ कर पाया है। प्रयोग या सुधार योजना ऐसी चुनी जाए जो निश्चित (definite) व स्थूल (concrete) हो तथा जिस से उस पाठशाला की वैयक्तिकता की झलक पड़े।

हमारे स्कूल अभावग्रस्त हैं। उपयुक्त तथा सहायक पाठ्य सामग्री के पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होने के कारण बेचारे अध्यापक को किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, यह कौन नहीं जानता। कौन नहीं जानता कि सामान्य अध्यापक अभाव का आश्रय लेकर, आलस्यवश अभाव को हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने के लिये निमन्त्रण समझ लेता है। परन्तु कुछ एक साहसी अध्यापक भी देखने में आये हैं जो अभाव को चुनौती समझते हैं और कटिबद्ध होकर सतत प्रयत्न द्वारा अभावों के रहते हुए भी शिक्षा में नये से नये प्रयोग करके सुधार लाने का प्रयास करते हैं। उनके मन में अपने व्यवसाय के प्रति सच्ची लगन होती है। कठिनाइयों और बाधाओं को चीरते हुए वे नन्हें मुन्हें बच्चों को अपना समझकर सुचारु रूप से शिक्षित करते रहते हैं—यही है ध्येय एक अच्छे अध्यापक के जीवन का।

उदाहरण के तौर पर एक पाठशाला का स्तर सभी कक्षाओं में बहुत ही उत्तम था। इस उत्तमता का ज्ञान सभी विषयों के लिखित कार्य से होता था। सभी कक्षाओं में ९०% बालकों का भाषा, हिसाब, इतिहास व सामान्य ज्ञान का लिखित कार्य शुद्ध,

सुन्दर व नियमानुसार पाया गया। जब उस पाठशाला के मुख्याध्यापक से पूछा गया कि यह कुशलता बालकों ने कैसे प्राप्त की, तो उत्तर मिला कि यह केवल एक वर्ष के प्रयत्न का परिणाम नहीं बल्कि यह कई वर्षों की निरन्तर साधना का फल है। प्रत्येक अध्यापक लिखित कार्य के स्तर को ऊंचा करने का प्रयास कई वर्षों से करता चला आ रहा है। अब तो यह प्रयास इस पाठशाला का आवश्यक अंग बन चुका है। उस पाठशाला में जिस दिन से बालक प्रवेश करता था उसमें यह भावना स्वयं आ जाती थी कि वह लिखित कार्य जितना भी करे वह शुद्ध व क्रमानुसार हो। शुद्धता व स्पष्टता केवल लिखित कार्य तक ही सीमित न थी, बल्कि वह पाठशाला के सम्पूर्ण जीवन में व्यापक थी। क्या बालकों की पुस्तकें, क्या उनका पहरावा, क्या कक्षा का कमरा–यहां तक कि आस पास के सम्पूर्ण वातावरण में सफाई की छाप थी। इस प्रयोग का प्रभाव पूर्ण पाठशाला पर पड़ा।

ऊपर दिया गया एक ही उदाहरण इस क्षेत्र में काम करने वालों को विश्वास व आशा दिलाएगा कि एक पाठशाला का पूर्ण रूप किस प्रकार निरन्तर प्रयास से परिवर्तित किया जा सकता हैं। न तो सुधार योजनाओं की कमी है और न ही रचनात्मक प्रोग्रामों की, कमी है तो केवल लगन की।

लगन हर अभाव की पूर्ति कर सकती हैं, परन्तु लगन के अभाव की पूर्ति न धन से हो सकती है न सामग्री से। लगन परिश्रम के लिये प्रेरित करती है। परिश्रम के आगे अभाव जनित बाधाओं के बन्धन ढीले पड़ जाते हैं और सहज ही फूट निकलती है एक आशा-किरण जो न केवल उत्साह वर्धक ही है परन्तु सफलता की प्रथम सीढ़ी भी। आशा, साहस और लगन से ओत-प्रोत परिश्रम न कभी व्यर्थ गया है न जा सकता है।

इस छोटी सी पुस्तिका में मिसेज़ एस० तनेजा ने कुछ एक संकेत दिये हैं कि प्रौजेक्ट कैसे चुना जाए, उसे चुनने के लिये कौन कौन सी बातों को ध्यान में रखा जाये तथा उन क्षेत्रों का ब्यौरा दिया गया है जिन में काफ़ी सुधारात्मक योजनायें पाई जाती हैं। कुछ सुधार योजनाओं के नमूने भी दिये गये हैं, जिन्हें आप अपनी पाठशालाओं में कार्यान्वित रूप देकर सुधार ला सकते हैं। उत्तम शिक्षा व उन्नतशील अभ्यासों के लिये चिंतन व कल्पना ही नये प्रयत्न करने की प्रेरणा देते हैं और अनुभवों से ही विचारों की उत्पत्ति होती है।

—सम्पादक

P.A. National Systems Unit,
National Institute of Educational
Planning and Aministration
17-B,SriAurbindo Marg,NewDelhi-110016
DOC. No.....
Date.....

३

प्रायोजना की आवश्यकता

अपने कार्य की योजना बनाना अध्यापकों और प्रधानाध्यापकों के लिये कोई नया कार्य नहीं है। हर पाठशाला में पाठ्यक्रम को महीनों में विभाजित किया जाता है, ताकि कार्य व्यवस्थित रूप में चल सके और अध्यापक को ज्ञान हो कि कितना पाठ्यक्रम कितने समय में समाप्त करना है। यदि अपने कार्य को नियमित रूप दे दिया जाए तो वह प्रोजेक्ट या प्रायोजना कहलाता है। लिखित या अलिखित विकास योजनाओं पर कुछ न कुछ कार्य तो हर पाठशाला में होता ही है परन्तु हो सकता है वह कार्य विद्यालय के एक ही पहलू को छूता हो। आज के युग में यदि पूरे विद्यालय के कई पहलूओं को छूने वाली योजनायें हों तो हमारी पाठशालाएं उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकती हैं और शिक्षा में गुणात्मक सुधार शीघ्र आ सकता है।

प्रायोजना को सफल बनाने में सब का सहयोग

विद्यालय के प्रत्येक व्यक्ति में अपनी अपनी शक्तियां व योग्यतायें होती हैं इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई अन्तर्निहित शक्तियां भी होती हैं जो उचित अवसर व उचित वातावरण पाकर उभर सकती हैं; इसी लिये सुधारात्मक योजना को चुनने के लिये पाठशाला के सभी अध्यापकों की सभा बुलाई जाये क्योंकि सुधार-कार्य के लिए बड़े विचार व मनन की आवश्यकता होती है। अध्यापक मिलकर अपने अनुभवों व अध्ययन के आधार पर ऐसी योजना चुन सकते हैं जिसे कार्यान्वित करते समय वे बालकों या अन्य साथियों का पथ प्रदर्शन कर सकें। प्रायोजना जब मिल कर बनती है तो एक दूसरे का सहयोग मिलता है, योजना निर्माण में और योजना की कार्यान्विति में भी। हां, प्रायोजना का चुनाव करने से पूर्व उन्हें निम्नलिखित सिद्धान्तों का ज्ञान होना आवश्यक होता है :

१. प्रायोजना ऐसी हो जिसमें बहुत से अध्यापकों और बालकों को रुचि हो ताकि वे उसे सफल बनाने में सहयोग दे सकें।

२. प्रायोजना ऐसी हो जिस का प्रभाव पाठशाला के सम्पूर्ण कार्य पर पड़े।

३. प्रायोजना ऐसी हो जिसे कार्य रूप देने के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध हों और जिस में समस्याओं व बाधाओं का सामना कम करना पड़े।

४. प्रायोजना के लिए लक्ष्यों का निर्धारण शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

५. प्रायोजना के उद्देश्य व लक्ष्य बालकों में ऐच्छिक परिवर्तन लाने के दृष्टिकोण से सामने रखे जायें।

६. प्रायोजना ऐसी हो जो विद्यालय के समय में पूरी हो सके, मुख्याध्यापक समय विभाग चक्र में उचित समय दे ताकि अध्यापकों को असुविधा न हो।

एक नेता होना आवश्यक है :

वैसे तो सुधारात्मक कार्य एक सहयोगिक कार्य है परन्तु इसकी कार्यान्वित के लिए एक सक्रिय नेता का होना आवश्यक है। यदि प्रधानाध्यापक स्वयं इस का नेता बन सके तो अच्छा वरन् वह जिस अध्यापक को योग्य समझे उसे इसका नेता बना दे और समय समय पर मूल्यांकन अवश्य करे क्योंकि विकास योजना की सफलता उसकी सूझ बूझ तथा रुचि लेने पर निर्भर है। क्या ही सराहनीय बात होगी यदि प्रायोजना का लिखित रूप वह अपने कार्यालय में भी टंगवा दे।

प्रायोजनाओं के प्रकारों को हम कई भागों में बांट सकते हैं परन्तु मुख्यतः हम दो प्रकारों में बाँटेंगे :—

१. अल्पकालीन योजना, जैसे डाकघर का ज्ञान देना। यह कार्य १५-२० दिनों में भी हो सकता है। जल वितरण योजना छः मास ले जाती है।

२. दीर्घकाल योजना, जैसे लेख व अक्षर विन्यास की शुद्धता जिसे कई वर्ष लग सकते हैं।

आरम्भ में तो यही उत्तम है कि अल्पकालीन योजनायें बनाकर उन्हें कार्य रूप दिया जाए, जैसे दो चार मासों की योजनायें। बाद में हम एक वर्ष या उससे अधिक की योजनायें भी बना कर अपनी पाठशाला का गुणात्मक सुधार कर सकते हैं। परन्तु यह एक अध्यापक का ही कार्य नहीं बल्कि इसमें सभी अध्यापकों, मुख्याध्यापक के अतिरिक्त विद्यालय निरीक्षक का मार्गदर्शन व सहयोग आवश्यक है। विद्यालय निरीक्षक व खण्ड शिक्षा अधिकारी त केवल मार्ग दर्शन करें बल्कि पाठशाला में किये गये प्रयत्नों की सराहना अवश्य करे।

क्रियायें :—

प्रत्येक प्रौजैक्ट को कार्यान्वित रूप में लाने के लिए कई प्रकार की क्रियाओं को करना पड़ता है, इसीलिए यह आवश्यक है कि :—

१. प्रत्येक विशिष्ट समस्या के लिये क्रियायों की उचित सूची बना ली जाए।

२. ऐसी क्रियायें चुनी जायें जिनके परिणाम उद्देश्यों के अनुरूप हों।

३. क्रियायें ऐसी हों जो नियत अवधि में समाप्त हो सकें। उन क्रियाओं के लिए आवश्यक सामग्री व साधनों की सूची बना ली जाए।

मूल्यांकन :

प्रोजैक्ट की सफलता उसके मूल्यांकन पर निर्भर है। प्रत्येक प्राजैक्ट दो मुख्य प्रश्नों का उत्तर अवश्य दे :—

१. क्या बालक सीखने की प्रक्रिया में वास्तविक रूप से रुचि लेते रहे हैं।

२. क्या बालकों में कोई वाञ्छित परिवर्तन दिखाई दे रहा है ?

मुख्याध्यापक का यह कर्तव्य है कि समय समय पर मीटिंग बुलाकर प्रायोजना की प्रगति की जांच करता रहे।

मूल्यांकन पद्धति का निर्धारण लक्ष्य और कार्य पद्धति के आधार पर ही होता है। मूल्यांकन कई ढंगों से किया जा सकता है। उदाहरणतया बालकों की बातचीत से, उनके व्यवहार से इत्यादि। इसकी कोई निश्चित विधि नहीं है।

प्राइमरी स्कूल के कार्यक्रम के निम्नलिखित क्षेत्र हैं जिन में सुधार योजनायें चालू की जा सकती हैं :—

१. पाठ्यक्रम से सम्बन्धित क्षेत्र।

२. सहगामी क्रियाओं का क्षेत्र।

३. स्कूल वातावरण का क्षेत्र।

४. स्कूल समाज का सम्बन्ध।

प्रत्येक क्षेत्र में कई प्रकार की योजनायें आ सकती हैं। उदाहरण के तौर पर पाठ्यक्रम से सम्बन्धित क्षेत्र में :—

१. विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिये हम खेल विधि का उपयोग कर सकते हैं।

(क) अपने पड़ोसी को समझो।
(ख) पंजाब दर्शन।
(ग) पढ़ने की उचित कला को विकसित करना।
(घ) गृहकार्य के प्रोग्राम को प्रभावपूर्ण बनाना।
(ङ) अक्षर विन्यास की अशुद्धियों को कम करना।

(च) सुलेख का सुधार करना।

(छ) पिछड़े हुए बालकों को उचित ढंगों से पढ़ाने का प्रोग्राम बनाना।

२. सहगामी क्रियाओं के क्षेत्र में हम निम्न प्रकार की योजनायें आरम्भ कर सकते हैं :—

(क) स्वशासन।

(ख) हाऊस सिस्टम।

(ग) बाल सभा।

(घ) भीति-पत्रिका।

३. वातावरण के क्षेत्र में भी कुछ योजनायें सुविधापूर्वक आरम्भ की जा सकती हैं :—

(क) स्कूल के वातावरण को सुन्दर बनाना।

(ख) पेड़ लगाना।

(ग) फल लगाना।

(घ) स्कूल के फर्नीचर व अन्य सामग्री का सुधार करना।

(ङ) सामान्य ज्ञान के अनुभवों की योजना बनाना।

४. स्कूल-समुदाय-सम्बन्ध का क्षेत्र।

(क) अध्यापक संरक्षक संघ।

(ख) स्कूल और ससाज के सांझे त्योहार।

(ग) माता पिता दिवस।

सुधारात्मक योजनाओं के प्रोग्राम में वातावरण का एक अत्यन्त रुचिपूर्ण व उत्साहजनक क्षेत्र है। बालक एक जिज्ञासु है, वह अपना भौतिक व प्राकृतिक वातावरण जानने के लिये सदा उत्सुक रहता है। इसी लिए समाज के बालक का मानसिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिये प्रयोग में लाये जा सकते हैं। शैक्षणिक पर्यटन, अजायबघर, पुस्तकालय, समाचार पत्र का कार्यालय, बैंक, डाकघर, रेलवे स्टेशन, पंचायतघर आदि समाजिक स्रोतों में आ जाते हैं, इन सब का बालक के जीवन पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार बालक राष्ट्रीय व स्थानीय त्यौहारों के मनाने में भी भाग ले सकते हैं। जैसे मुख्य नेताओं के जन्म दिवस मनाने, स्वतन्त्रता दिवस व गणराज्य दिवस में, इत्यादि।

कई स्थानीय सम्मानित व्यक्ति जैसे थानेदार, बैंक मनेजर, वकील, डाक्टर, समाज सेवक भी पाठशाला में अपने अपने कार्यों का परिचय बालकों को देने के लिए आमन्त्रित किये जा सकते हैं। ऐसे भाषण न केवल बालकों के ज्ञान में वृद्धि करते हैं बल्कि बालकों की जिज्ञासा अधिक ज्ञान ग्रहण करने के लिए बढ़ाते हैं और वह उत्सुकता से प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित होते हैं।

प्रमुख प्रायोजनाओं का विवरण

: १ :

प्रौजैक्ट का शीर्षक—चौथी कक्षा की अक्षर विन्यास की सामान्य अशुद्धियों को जानना तथा उनको दूर करने के उपाय ढूंढना।

समय—एक वर्ष।

कक्षा अध्यापक का नाम :—

उद्देश्य :—१. बालकों को अपनी मातृभाषा को शुद्ध रूप से लिखने के योग्य बनाना।

२. बालकों ने जो नए शब्द पुस्तक में से या सुनकर सीखे हैं उनमें उनका उचित प्रयोग करने की क्षमता बढ़ाना।

३. बालकों में पत्र व पत्रिकाओं के पढ़ने के लिये रुचि उत्पन्न करना ताकि वह भाषा का शुद्ध रूप सीख सके।

४. छात्रों की वर्तिनी सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करना।

प्रक्रिया :—१. यदि पांच बालकों ने एक ही अशुद्धि की है तो उसे आम अशुद्धि कहा जाएगा। बालकों की सहायता से आम अशुद्धियों की सूची तैयार करवाई जायें।

२. पहले बालकों की निदानात्मक परीक्षा ली जाए ताकि पता चल जाए कि बालक किस किस प्रकार की अशुद्धियां करते हैं।

३. विभिन्न, फलैश कार्ड बनाये जायें जिन पर शब्दों का शुद्ध रूप लिखा जाए।

४. शुद्ध शब्द बालकों को कक्षा में बतलाये जायें।

५. कुछ छपे हुए शुद्ध वाक्य बालकों को दिये जायें जिस से बालकों को उन

शब्दों के उचित प्रयोग का ज्ञान हो।

६. समय समय पर बालकों की पढ़ने, लिखने ब बोलने की परीक्षा ली जाए।

७. आम अशुद्धियों की पूर्ण सूची बालकों से पढ़वाई जाये।

८. बालकों को ऐसी पुस्तकें दी जायें जिन में वही शब्द हों।

मूल्यांकन : प्रोजैक्ट की सफलता तभी जानी जा सकती है जब बालक अक्षर-विन्यास की अशुद्धियां करना बन्द कर दें तथा उन्हें शब्दों के शुद्ध रूप का पूर्ण ज्ञान हो जाए

२

प्रोजैक्ट का शीर्षक—गृह कार्य को प्रभावपूर्ण बनाना।

समय : एक वर्ष।

अध्यापक का नाम :

उद्देश्य :

१. बालकों की मानसिक शक्तियों का विकास करना।
२. कक्षा में पढ़ाये गये पाठ के आयोजित गृहकार्य के प्रोग्राम द्वारा बालकों को अभ्यास देकर उनके ज्ञान को स्थाई करना।
३. बालकों को आत्माभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना।
४. बालकों को पढाने की क्रियाओं के उद्देश्य से परिचित कराना।
५. गृहकार्य बालकों को किसी उद्देश्य से पढ़ने के लिए प्रेरित करता है जिस से उनमें अधिक सीखने की वृत्ति उत्पन्न होती है।
६. गृहकार्य बालक को अपनी योग्यता व स्वतन्त्रता से पढ़ने के लिए पथ-प्रदर्शन करता है।
७. कक्षा को पढ़ाये गये तथ्यों को बालक के मस्तिष्क में स्थाई रूप देने के लिए दिया जाता है।
८. आयोजित गृहकार्य बालक के व्यक्तित्व को विकसित करने का अच्छा साधन है।

गृहकार्य कैसा हो :

१. गृहकार्य एक अलग अंग नहीं होना चाहिये बल्कि यह कक्षा में कराये गये कार्य से उत्पन्न होना चाहिये।

२. (क) गृहकार्य में ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए जो पाठ के महत्वपूर्ण तथ्यों पर बल देते हों।
(ख) जो बालकों को क्रियाशील बनाने के लिये उत्तेजित करते हों।

(ग) जो बालकों के कार्य की अशुद्धियां दूर करते हों।

(घ) जो बालकों को अभ्यास करने के अवसर देते हैं।

(ङ) गृह कार्य ऐसा हो जो बालकों की जिज्ञासा व रुचि को तीव्र करने वाला हो तथा बालकों की रचनात्मक प्रवृत्ति को सतुष्ट करने वाला हो।

(४) गृहकार्य विभिन्न प्रकार का हो सकता है उदाहरण या अभ्यासात्मक कार्य, तथ्यों को एकत्रित करना, चित्रों की काटना, कोई चित्र बनाना, सामग्री को ग्राफ़ों की शक्ल में संगठित करना, तथा जो बालक ने अनुभव किया हो उस पर अपने विचार प्रकट करना इत्यादि।

५. गृहकार्य ऐसे ढंग से आयोजित किया हुआ हो कि जिस से बालकों की घर पर पढ़ने के प्रति रुचि बढ़े और उसमें संतुष्टता की भावना का विकास हो।

(६) गृह कार्य इतनी अधिक मात्रा में इतना कठिन न दिया जाए कि बालक उसी में ही उलझा रहे।

(७) विषय की महत्ता तथा कठिनाई भी गृहकार्य देते समय ध्यान में रखी जाए।

प्रक्रिया :

माता पिता के सहयोग से ही हम इस प्रोग्राम को सफल बना सकते हैं, इसी लिए कक्षा अध्यापक कभी कभी माता पिता को निमन्त्रित करके उन्हें गृह कार्य के महत्व से जानकारी कराये। यदि माता पिता शिक्षित हैं तो बालकों को गृहकार्य पूर्ण करने के लिये घर में उचित वातावरण प्रदान करें और बालक की सहायता करें।

मूल्यांकन : प्रोजैक्ट आरम्भ करने से पूर्व देखा जाए कि बालक गृहकार्य क्यों नहीं पूरा करके लाते, उन्ही कारणों के परीक्षण के पश्चात् अध्यापक यदि यह अनुभव करे कि कक्षा में अब १० प्रतिशत बालक सही रूप से गृहकार्य बिना किसी कठिनाई के कर लाते हैं तो अध्यापक अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर रहा है।

३

प्रोजेक्ट का शीर्षक—छात्रों में स्वशासन की भावना का विकास करना।

समय : एक वर्ष।

अध्यापक का नाम :

उद्देश्य : बालकों को नागरिकता की शिक्षा देने के लिए नेतृत्व तथा नियम पालन करने की शिक्षा देना। पाठशाला में स्वशासन निर्माण करने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

(१) बालकों को साहित्यक, सांस्कृतिक, क्रियाओं में भाग लेने के अवसर प्राप्त करना।

(२) बालकों को उत्तरादायित्व संभालने तथा आगे बढ़ कर काम करने की भावना उत्पन्न करना।

(३) बालकों को जनतांत्रिक सिद्धान्तों व प्रक्रियाओं का ज्ञान क्रियात्मक रूप से देना।

(४) बालकों में सहयोग की तथा पाठशाला के प्रति भक्ति की भावना का विकास करना।

(५) विभिन्न कक्षाओं में से चुने हुए प्रतिनिधियों का अच्छा सम्बन्ध स्थापित करना।

(६) पाठशाला के अनुशासन को सुधारना।

प्रक्रिया (Procedure) :

(१) जिस अध्यापक ने यह कार्य अपने ऊपर लिया हो वह पहले स्वशासन का अर्थ स्पष्ट करे।

(२) विद्यार्थियों की परिषद बनाने की योजना बनाई जाए तथा परिषद के संगठन, शक्तियों तथा कर्त्तव्यों से बालकों को परिचित कराया जाए।

(३) पूर्ण पाठशाला के बालकों को इकाइयों में बांटा जाए। यदि पांच कक्षायें हैं तो १० इकाइयों में बांटा जाए। इसी प्रकार पाठशाला के बिभिन्न कार्यों को भी ५ या १० भागों में बांट लिया जाए, जैसे :—

(क) सफाई विभाग।

(ख) अनुशासन विभाग।

(ग) समाज सेवा विभाग।

(घ) वैज्ञानिक सभा।

(ङ) सांस्कृतिक सभा।

बालकों को प्रत्येक विभाग व सभा का प्रतिनिधि चुनने से पूर्व किसी जिम्मेवार बालक का नाम सुझाना तथा सैकंड करने के बारे में बताना अध्यापक का कर्त्तव्य है, उस के पश्चात् वोट देने की प्रणाली से भी परिचित कराना आवश्यक है। मुख्य अध्यापक या किसी बालक को राष्ट्रपति चुन लिया जाए। पहली सभा में चुने गए बालकों को शपथ लेने की प्रथा से परिचित कराया जाए। इसी प्रकार चुने गए मन्त्री अपना २ कर्त्तव्य अध्यापक के पथ प्रदर्शन में करें और मास में एक या दो बार सारी मन्त्री परिषद की सभा बुलाई जाए और इस प्रोजैक्ट को सफल बनाने के लिए तथा स्कूल के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार लाने के सुझाव रखे जायें।

मूल्यांकन :

(१) मुख्य अध्यापक को जो जो पहले काफी शिकायतें आती थीं और अब उन की संख्या कम हो गई हो तो प्रोजैक्ट सफल है।

(२) बालक अध्यापक की अनुपस्थिति में पाठशाला के विभिन्न कार्यों को ज़िम्मेवारी से निभा सकते हैं या नहीं।

(३) विभिन्न कक्षाओं के बालक इस प्रोजैक्ट को सफल बनाने में अपने चुने हुए नेता की आज्ञा मानते है तो यह प्रोजैक्ट सफल हैं।

(४) यदि बालक अपनी बाल सभा का प्रबन्ध करने में तथा स्कूल के अन्य कार्यों को निभाने में अपनी २ ज़िम्मेदारी समझ कर अपना २ कर्त्तव्य निभाते हैं, और अध्यापक को अनुशासन सम्बन्धी कठिनाइयों का सामना करना नहीं पड़ता तो स्वशासन स्कूल का एक अंग माना जाता है।

४

प्रोजैक्ट का शीर्षक : लेख शुद्ध करवाना।

कक्षा या कक्षायें : यदि सम्भव हो तो सभी प्राइमरी कक्षाओं में यह प्रोजैक्ट एक साथ ही आरम्भ करना चाहिए, क्योंकि लेख सुधार करने में केवल एक वर्ष ही पर्याप्त नहीं बल्कि इस कला को बिकसित करने के लिए काफी समय चाहिए, इसी लिए पूर्ण पाठशाला में ही यह आरम्भ करना चाहिए तथा सभी अध्यापक इस में रुचि लें तो लेख शीघ्र शुद्ध हो सकता है।

समय : यह एक स्थाई प्रोजैक्ट है, आरम्भ में यदि पूर्ण वर्ष लगा लिया जाए तो बाद में यह पाठशाला का एक अंग ही बन जाएगा।

लक्षण : सुन्दर व स्वच्छ लेख का बालक की शिक्षा में बहुत ही महत्त्व है। बालक में कलात्मक वृत्ति उत्पन्न करने के अतिरिक्त स्वच्छता व स्पष्टता जैसी आदतों का विकास होता है। सुलेख के निम्नलिखित लक्षण हैं :—

(१) स्वच्छता।
(२) शब्दों की बनावट में एकसारता।
(३) एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति का अन्तर।
(४) दो शब्दों के मध्य में उचित उचित अन्तर।
(५) शब्दों की बनावट इत्यादि।

उद्देश्य :

(१) बालकों में सुन्दर ढंग व उचित रूप से लिखने की आदत डालना।
(२) बालकों में मांसपेशियों को अनुशासित करने की आदत डालना।
(३) शब्दों की उचित बनावट से परिचित कराना।

(४) लिखने की गति तथा अक्षर विन्यास में सुधार करना।

(५) बालकों में सुन्दरता की भावना का विकास करना।

(६) बालकों में आत्मविश्वास तथा उपलब्धि की भावना का विकास करना।

आवश्यक सामग्री : तख्ती, कलम, चमकदार सियाही, चाकू, चाक या मिट्टी, पैमाना, पैन्सिल, सुलेख की कापियां, अभ्यास के लिये तीन लाइनों वाली कापियां, ऐसे चार्ट जिन में लिखाई का विकास क्रमबद्ध दिखाया गया हो तथा आदर्श लिखाई वाले चार्ट।

Procedure :

(१) लिखाई सिखाने का ढंग सभी कक्षाओं में स्तर के अनुसार भिन्न २ होगा, उदाहरण के तौर पर पहली कक्षा में बालकों को तख्तियों पर लिखना पड़ता है। इसीलिए पहली कक्षा में तख्ती पोतने व साफ करने का ढंग अध्यापक को प्रदर्शित करना होगा ताकि बालकों में इस प्रक्रिया को करने के प्रति रुचि उत्पन्न हो।

(२) पहली कक्षा के बालक सीधी लाईन नहीं खींच सकते, इसीलिए अध्यापक ने व्यक्तिगत रूप से बालकों की तख्तियों पर फुट्टे की सहायता से लाईने खींचने में उनकी सहायता करनी है।

(३) बालकों को यदि पूरने डालकर दे दिये जाएं तो बालक लिखने की कला की ओर प्रेरित हो जाते हैं।

(४) अध्यापक ने कलम बना कर देनी है।

(५) बच्चों को कलम पकड़ना तथा उचित रूप से स्याही व तख्ती रखना भी अध्यापक ने सिखाना है।

(६) दूसरी, तीसरी व चौथी कक्षा में अध्यापक ने श्यामपट पर नियमानुसार लिखना सिखाना है।

(७) सुलेख की कापियों का प्रयोग तो सभी कक्षाओं में करना है ज्यों २ वह बड़ी कक्षा में जाते है, उन्हें स्वतंत्र रूप से लिखने की आदत डालनी है!

(८) शब्दों की बनावट में एकसारता लाने के लिए लाईनों वाली कापियों पर लिखना सिखाना है।

क्रियायें :

(१) लिखना एक कला है और यह लगातार अभ्यास से ही ग्रहण की जाती है। इसीलिए लिखने का अभ्यास दैनिक कार्यक्रम का एक आवश्यक अंग होना चाहिए। प्रतियोगिताओं

का यदि आयोजन किया जाए तो बालकों को उत्साह मिलता है। प्रतियोगितायें कक्षा स्तर, पाठशाला स्तर, विभिन्न पाठशालाओं के स्तर तक आयोजित की जा सकती है।

(२) पाठशाला का जब वार्षिक दिवस हो तो जिन बालकों का लेख बहुत सुन्दर हो उनके लेख को प्रदर्शित करना चाहिए।

(३) प्रतिदिन एक घंटी प्रतिलिपि कराने से भी परिणाम अच्छे प्राप्त हो सकते हैं।

(४) जब बालक प्रतिलिपि कर रहे हों तो अध्यापक कक्षा में सक्रिय रहना चाहिए तथा व्यक्तिगत रूप से लिखाई का संशोधन वहां ही करना चाहिए।

सावधानियां :

(१) यह आवश्वक है कि अध्यापक का अपना लेख सुन्दर एवं आदर्श हो।

(२) बालकों को यह आदेश देना आवश्यक है कि लिखा हुआ न तो हाथ से मिटायें और न ही काटें।

(३) बालकों को अपने हाथ व कापियों को साफ रखने का आदेश दिया जाए।

(४) व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक बालक का पथ प्रदर्शन करना आवश्यक है।

(५) सराहना करने से बालक शीघ्र सुधार कर सकते है इसलिए अध्यापक कदम २ पर उनकी सराहना करे ताकि बालक निरुत्साह न हो।

मूल्यांकन :

१. बालकों की लिखाई का मासिक-प्रति का चार्ट रखा जाए तथा जिन बच्चों का लेख बहुत सुन्दर हो उनके नाम स्कूल सभा में बोले जायें तथा हैड मास्टर के आफिस के बाहर नोटिस बोर्ड पर लिखा जाये।

२. इस प्रौजैक्ट का प्रभाव बालकों की सफाई तथा उनमें पाई गई कलात्मक भावना से जांचा जा सकता है।

३. हर कार्य जब बालक स्वच्छ व सुन्दर लेख में करने लग जावे तो यह प्राजैक्ट सफल माना जा सकता है।

५

प्रौजैक्ट का शीर्षक : पढ़ाने में खेल विधि का प्रयोग

अध्यापक का नाम :

समय : समय अध्यापक पर निर्भर है कि उसने विशिष्ट विषय पढ़ाने के लिए कितने खेल तैयार किये हैं। आम तौर पर सप्ताह में एक घंटी अवश्य खेल विधि द्वारा विषय को पढ़ाने के लिए लगाई जाए। पाठ को रुचिकर बनाने के लिए तथा बालकों को एकाग्र-चित्त रखने के लिए खेल विधि का प्रयोग करना चाहिए।

खेल विधि का महत्व :—

मनोवैज्ञानिक रूप से सब बालक खेल से प्रेम करते है चूंकि खेल में ही बालक को स्वतंत्रता, क्रिया तथा रचना का अवसर मिलता है। पढ़ाने में खेल विधि से अभिप्राय है कि ऐसी क्रियाओं का आयोजन करना जो कि निरर्थक खेल न होकर शैक्षणिक हों। खेल द्वारा बालक की जन्मजात प्रवृत्तियों (लड़ना झगड़ना, आत्मगौरव इत्यादि) की तृप्ति होती है, खेल २ में ही अपनी नेतृत्व व अधीनता की शक्तियों के अभ्यास के अवसर पाता है। खेल विधि द्वारा पढ़ाया हुआ ज्ञान अधिक विकसित तथा स्थाई होता है।

उद्देश्य :

१. बालकों को क्रिया सीखने में सहायता दे कर उनकी मानसिक व बौद्धिक शक्तियों का विकास करना।
२. बालकों को ऐसे अवसर प्रदान करना कि वह उत्तरादियत्व तथा मौलिकता को प्रदर्शित करके अपने व्यक्तित्व को विकसित कर पायें।
३. बालकों में जिज्ञासा की शक्ति का उचित प्रयोग करके समस्या को हल करने की वृत्ति उत्पन्न करना।
४. बालकों को इस योग्य बनाना कि वे एकाग्रचित बनें, निरीक्षण करें तथा सीखे हुए तथ्यों का स्मरण कर सकें।
५. बालकों में सहयोग तथा योजना बनाने की आदत डालनी।
६. बालकों को आत्माभिव्यक्ति के अवसर देकर उन में आत्मविश्वास तथा स्वस्थ जीवन जीने के लिए उत्साह की भावना भरना।

सावधानियां : खेल विधि को साध्य न समझ कर साधन समझा जाए। यह एक प्रकार का रुचिकर शैक्षणिक अनुभव है। कक्षा में इसका प्रयोग करने का उद्देश्य है कि बालक खेल में सुविधापूर्वक अधिक ज्ञान ग्रहण कर पायें। इसके शैक्षणिक उद्देश्य अध्यापक ने कभी नहीं भूलना है। अचेतन रूप से बालकों को बिना प्रयत्न किये ज्ञान देना है। शैक्षणिक खेल तो शिक्षा प्रदान करने का एक यन्त्र है जिन का प्रयोग अध्यापक ने प्रवीणता से करना है। खेल में सभी बालकों को भाग दिया जाए न कि केवल चतुर बालकों को।

खेलों के कुछ नमूने : एक योग्य तथा परिश्रमी अध्यापक कई प्रकार के खेल बालकों के मानसिक स्तर व आयु के अनुसार सोच सकता है। निम्नलिखित खेलों के कुछ नमूने दिये जाते हैं जिस का प्रयोग विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

१. पांचवी कक्षा में कुछ सार्थक शब्द श्यामपट पर लिखे जायें। बालकों को कहा जाये कि वह उन्हीं की सहायता से कुछ सार्थक शब्द बनायें।

२. अध्यापक पहले वर्णमाला के अक्षर चार्ट पेपर पर मोटे २ लिखकर काट कर बच्चों में बांट दे। फिर अध्यापक पूर्ण कक्षा के सामने एक बड़ा शब्द बोले और बालकों को कहा जाए कि जिन २ बालकों के पास वह अक्षर जिनसे वह शब्द बना है क्रमानुसार हाथ में लेकर सामने खड़े हो जायें और अध्यापक वही शब्द श्यामपट पर लिख दे ताकि वह शब्द बालकों के मन में स्थाई हो जाये।

३. सामाजिक अध्ययन में यदि 'भारत का तट पढ़ाना है तो चार्ट पेपर पर गुड़िया का चित्र बनाकर, उस गुड़िया को नाव में बिठाकर भारत के मानचित्र पर उस नाव को तट के किनारे २ ले जाया जाए। साथ ही साथ यात्रा विधि की सहायता से मुख्य २ जगहों की विशेषता बतलाई जाए जो मार्ग में आते हैं, इसी प्रकार बालक खेल २ में ही काल्पनिक रूप से तट की यात्रा करते हुए ज्ञान ग्रहण कर लेगें।

यदि कोई कहानी इतिहास की आ जाती है तो उसको नाटक के रूप में अभिनीत कराया जाए जैसे तीसरी कक्षा में पोरस और सिकन्दर की कहानी, पृथ्वी राज, आचार्य चाणक्य, पुत्र.दिया भेद न दिया, महाराणा प्रताप आदि की कहानियां आती हैं, बालकों को अपना २ भाग देकर कक्षा में ही नाटक करवा दिया जाए तो ज्ञान स्थाई होगा।

मूल्यांकन :

मूल्यांकन कई प्रकार से किया जा सकता है। बाल सभा में, वार्तालाप द्वारा नये शब्दों का वाक्यों में प्रयोग देकर या प्रश्नों के उत्तर मांग कर बालकों के ज्ञान का मूल्यांकन किया जा सकता है।

• ६

प्रौजेक्ट का शीर्षक—सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।

समय :—एक मास।

अध्यापक का नाम :—

उद्देश्य :—

१. बालकों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
२. भारतवर्ष के रमणीय स्थानों की विशेषताओं का ज्ञान कराना, धार्मिक स्थानों से परिचित कराना तथा भारत के उद्योगों के बारे में ज्ञान बढ़ाना।
३. बालकों को भारतवर्ष के साथ अन्य देशों के व्यापार सम्बन्धी बातों से परिचित करना

procedure : बालकों को भारत दर्शन कराने के लिए कक्षा के बालकों को चार ग्रुपों में बांट

दिया जाए।

ग्रुप नम्बर एक—भारत के धार्मिक स्थानों के चित्र एक एलबम में लगाकर नीचे प्रत्येक का ब्यौरा लिखें।

ग्रुप नम्बर दो—भारत का नक्शा खींच कर जहां २ धार्मिक स्थान हैं वहां शहर व धार्मिक स्थान के नाम मोटे २ अक्षरों में लिखें।

ग्रुप नम्बर तीन—भारत के रमणीक स्थान नक्शे में भरें तथा उनकी विशेषता का वर्णन अपनी २ कापी पर लिखें तथा उन स्थानों पर पाये जाने वाले पशुओं के चित्र भी कापी में लगायें ताकि ज्ञान स्थाई हो जाये।

ग्रुप नम्बर चार—औद्योगिक केन्द्रों को भारत के नक्शे में भरें तथा उस स्थान के विशिष्ट उद्योग का नाम किसी समाचार पत्र या पत्रिका से काट कर वहीं चिपका दें तथा अभ्यासात्मक कार्य की कापी में उद्योगों का वर्णन मोटे २ अक्षरों में सुन्दर रूप से लिखें।

इसी प्रकार आने जाने के साधनों के चित्र इकट्ठे करके उनके आविष्कारकों की कहानियां भी उनके चित्रों सहित कापियों में मोटे २ शब्दों में लिखाई जा सकती हैं और एल्बम का प्रयोग कराया जा सकता हैं। इस प्रोजैक्ट को सफल बनाने के लिए अध्यापक जन सम्पर्क अधिकारी की सहायता से **(Public Relation officer)** से सम्बन्ध स्थापित करके बालकों को धार्मिक स्थानों, रमणीक स्थानों व औद्योगिक केन्द्रों की फिल्म दिखाने का प्रबन्ध किया जा सकता है। यह प्रोजैक्ट तीसरी, चौथी व पांचवीं कक्षाओं में सफलता पूर्वक लिया जा सकता है।

मूल्यांकन—बालकों के सामान्य ज्ञान का परीक्षण करने के लिए भारत के नक्शे को कक्षा में टंगा कर विभिन्न स्थान पूछे जा सकते हैं, एक धार्मिक स्थान की दूसरे धार्मिक स्थान से तुलना कराई जा सकती हैं तथा जो वस्तुयें हम बाहर भेजते हैं उनके चित्र कापियों में लगवाकर सूची बनवाई जा सकती हैं।

७

प्रोजैक्ट का शीर्षक—पाठशाला के वातावरण को सुन्दर बनाना।

समय—एक वर्ष।

अध्यापक—एक अध्यापक जिसमें सौन्दर्यानुभूति का उचित विकास हुआ हो तथा तीन अन्य अध्यापक जो उसकी सहायता करने वाले हों।

उद्देश्य—आकर्षक व सुन्दर वातावरण का बालक के जीवन में बहुत ही महत्व है। यदि पाठशाला का वातावरण सुन्दर हो तो बालक वहां अधिक समय व्यतीत करना चाहते हैं। इस प्रोजैक्ट के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :—

१. बालकों में सुन्दरता की भावना का विकास करना ।

२. बालकों में श्रम के प्रति श्रद्धा की भावना भरना ताकि वास्तविक रूप से हाथ से खुरपा व कस्सी लेकर वे प्रसन्नता से काम करना सीखें ।

३. हर चीज़ को उचित जगह पर रखने की आदत बालकों में डालना ।

४. स्कूल की आकर्षण एवं रमाने की क्षमता बढ़ाना ।

procedure :— सबसे पूर्व कार्य करने की रूप रेखा तैयार करके अध्यापकों व बालकों के प्रतिनिधियों के साथ उस पर विचार विमर्श करना कि किस प्रकार समूचे वातावरण को सुन्दर बनाया जाये ।

२. क्योंकि पाठशाला की सुन्दरता पाठशाला की चार दिवारी तथा गेट पर निर्भर है इस-लिए इन दो मुख्य आवश्यकताओं की ओर ध्यान देना बहुत आवश्यक है ।

३. पाठशाला की जितनी कक्षायें या जितने सैक्शन हों उतने क्षेत्रों में उसे बांटना चाहिए और प्रत्येक कक्षा या सैक्शन को एक २ क्षेत्र को सुन्दर बनाने के लिए सौंपना चाहिए

४. फूल उगाना, पेड़ लगाना, स्कूल की सड़क बनाना, फूलों की क्यारियां बनाना, कमरों व बरामदो को सुन्दर बनाना इत्यादि कार्य इसी में ही आ जाते हैं ।

क्रियायें :—

१. स्कूल टाईमटेबल में एक घंटी इसी कार्य के लिए रखी जाए ।

२. चौथी व पांचवीं कक्षा के बालकों की एक कमेटी एक अध्यापक की देख रेख में बनाई जाए जो कि प्रति सप्ताह या पन्द्रह दिनों के पश्चात इस प्रौजैक्ट का मूल्यांकन करे तथा इस मे सुधार लाने के लिए सुझाव देवे ।

३. कक्षाओं की सफाई की प्रतियोगिता रखी जाए ताकि बालकों को अपना कमरा साफ़ रखने की आदत पड़े, उनमें सहयोग एवं सहकारिता की भावना उत्पन्न हो । जो कक्षा सारे वर्ष से तीन बार से अधिक उस प्रतियोगिता में जीते उस कक्षा को शील्ड मिले ।

४. बालकों को अपनी सफाई रखने में प्रोत्साहन देने के लिए (**Merit Badges**) गत्ते के बनाकर दिये जायें वह **Badge** उस बालक को मिले जो सारा मास साफ सुथरा रहता आया हो और वह **Badge** एक सप्ताह के लिए उस बालक के पास रहे, फिर अन्य बालक के पास रहे, फिर अन्य बालक जो उस का अधिकारी हो उसे मिले ।

मूल्यांकन: प्रोजैक्ट की सफलता स्कूल के पूर्ण वातावरण के साफ सुथरा व सुन्दर होने से जांची जा सकती है । जब बालकों के मन में सफ़ाई के प्रति आन्तरिक भावना हो जावे तो वह पाठशाला का एक अंग बन जाता है और प्रत्येक बालक सफ़ाई रखने का जिम्मेवार हो सकता है ।

८

प्रोजैक्ट का शीर्षक :—स्कूल संग्रहालय की व्यवस्था करना ।

अध्यापक का नाम :

समय : यह एक ऐसा प्रोजैक्ट है जो कि कुछ वर्षों में धीरे २ उन्नत होता है । आरम्भ में पहले वर्ष तो काफी ध्यान देने व प्रयास करने की आवश्यकता है बाद में अध्यापकों व बालकों में रुचि उत्पन्न हो जाती है ।

उद्देश्य : मनोवैज्ञानिक व शैक्षाणिक महत्व तो बहुत ही हैं । इस के बनाने से बालकों की जिज्ञासा, रचना तथा संग्रह करने की प्रवृत्तियों की तृप्ति होती है तथा सराहना मिलने से उनका भावात्मक विकास होता है । शैक्षणिक रूप से भी अजायबघर वास्तविक वस्तुओं से ज्ञान ग्रहण करने का बड़ा स्रोत है । इस प्रोजैक्ट के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :—

१. पाठशाला के लिए शैक्षणिक वस्तुओं को संचित करना ।

२. पुस्तकों से ज्ञान ग्रहण करने की अपेक्षा बालकों को वास्तविक वस्तुओं से ज्ञान ग्रहण करने के योग्य बनाना ।

३. बालकों की निरीक्षण शक्ति का विकास करना ।

संग्रह करने योग्य वस्तुएं:—संग्रहालय में ऐसी वस्तुएं रखनी चाहिएं जिनका शैक्षणिक महत्व हो, जिन वस्तुओं में बालकों की रुचि हो, जिनका ज्ञान बालकों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो । संग्रहालय को हम विभिन्न सैक्शनों में बांट सकते हैं ।

१. ललित कलाकक्ष—इस सैक्शन में चित्र कला, मिट्टी के काम की तथा लकड़ी आदि की बनी हुई उत्तम से उत्तम वस्तुएं हों ।

२. उद्योग कक्ष में कताई बुनाई की, गत्ते के काम की, लकड़ी व चमड़े की बनी हुई सामग्री हो ।

३. विज्ञान कक्ष में पत्तों, पौधों, फूलों की एल्बम हों । जानवरों, कीड़ों व पखों की एल्बम भी इसी में ही रखी जा सकती है ।

४. सामाजिक अध्ययन कक्ष में चार्ट, माडल तथा अन्य प्रकार की सामग्री जो इतिहास भूगोल व नागरिक शास्त्र से सम्बन्धित हो, रखी जाए ।

५. संग्रहालय में टिकटों, सिक्कों व हस्तलिखित कहानियां कवितायें इत्यादि का संग्रह भी प्रदर्शित किया जा सकता है ।

प्रक्रिया: —

१. बालकों को संग्रहालय बनाने से पूर्व प्रेरणा देने के लिए किसी संग्रहालय दिखाने अवश्य ले जाना चाहिए ।

२. अध्यापकों व बालकों में से चुने हुए प्रतिनिधियों की एक कमेटी बनाई जाए जो इस प्रोग्राम को सफल बनाने के लिए सारी योजना बनाये ।

३. प्रत्येक सैक्शन की आवश्यकताओं के अनुसार उन वस्तुओं की सूची बनाई जाए जो उस सैक्शन में होनी चाहिएं।

४. बालकों में प्रतियोगता की भावना का उचित विकास करने के लिए विभिन्न कक्षाओं के बालकों को वस्तुओं का संग्रह करने के लिए उत्तेजित करना चाहिए।

५. संग्रहालय की कमेटी समय २ पर उसकी प्रगति की जांच तथा इसमें सुधार लाने के लिए इसकी जांच करे तथा सुझाव देवे।

६. विद्यार्थियों को अपनी वस्तुओं के रूप का वर्णन करने के लिए उन चीज़ों पर प्लेट लगाना तथा लेबल लगाना आना चाहिए।

७. वस्तुओं का कलात्मक ढंग से प्रदर्शन करने के लिए कलात्मक वृत्ति वाले अध्यापक को यह काम सौंपना चाहिए।

८ संग्रहालय का इतिहास रखने के लिए इसकी प्रगति का रिकार्ड संग्रहालय में टंगा होना चाहिए।

९. जिन बालकों की वस्तुएं संग्रहालय में बहुत उत्तम हों उन्हें सराहना मिले तथा उन्हें समय २ पर इनाम मिलने चाहिएं।

कठिनाईये:—प्राईमरी स्कूलों में जगह का कमी तथा अलमारिएं आदि खरीदने के लिए पैसे की आवश्यकता होगी, इसके लिए वे अपनी स्थानीय पंचायत या किसी अन्य सामाजिक स्त्रोत से सहायता मांग सकते हैं या माता-पिता व अध्यापक की ऐसोसियेशन की मदद से ले सकते हैं। खण्ड शिक्षा अधिकारी भी इस कार्य में प्राईमरी स्कूलों की मदद सरकार के सहयोग मिलने से कर सकता है।

मूल्यांकन—इस प्रोजैक्ट की सफ़लता की जांच बच्चों का संग्रह करने के प्रति जोश व रुचि से हो सकती है। विद्यार्थियों में जिज्ञासा की प्रवृत्ति व खोज की भावना तथा संग्रह की हुई वस्तुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से भी पता चलता है कि यह योजना कहां तक सफल हुई है समय २ पर निरीक्षण करने से संग्रहालय की प्रगति का पता चलता है।

९

प्रौजैक्ट का शीर्षक:—बागवानी

अध्यापक:—जिसने अपने प्रशिक्षणकाल यह उद्योग लिया हो या जिस अध्यापक को इस में रुचि हो।

समय :— ६ मास।

उद्देश्य :—१. बालक में श्रम के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करना तथा सहयोग की भावना भरना।

२. पाठशाला के वातावरण को सुन्दर बनाना।

६. बालकों में पाऐ गई रचनात्मक व कलात्मक वृति का विकास करना।

४. बालकों को प्राकृतिक वातावरण से परिचित करना।

Sub. National Systems Unit,
National Institute of Educational
Planning and Aministration
17-B,SriAurbindo Marg,NewDelhi-110016
DOC. No.....
Date.....

आवश्यक सामग्री :—इस प्रौजैक्ट को आरम्भ करने से पूर्व खण्ड शिक्षा अधिकारी का सहयोग प्राप्त करना आवश्यक है क्योंकि इसी के सहयोग से इस प्रोजैक्ट को चलाने के लिए २५ खुरपे, ५ कस्सियां, ५ बालटीयां, ४ तसले, ४फव्वारे, रस्सी तथा मापने वाले फीते की आवश्यकता है ।

Procedure :—

१. बालकों की संख्या व जगह के अनुसार विद्यार्थियों को ग्रुपों में बांट लिया जाए तथा प्रत्येक ग्रप का एक २ नेता चुन लिया जाए तथा प्रत्येक ग्रुप को जगह दे दी जाए ।

(२) अध्यापक की अध्यक्षता में सब ग्रुपों के नेताओं की मीटिंग करके योजना बना ली जाए कि उन्हों ने अपनी कितनी २ क्यारियां कहां २ बनानी हैं तथा उन में कौन २ से फूल लगाने हैं तथा कौन से पेड़ सुन्दरता के लिए लगाने हैं ।

(३) प्रत्येक ग्रुप के नेता को आवश्यक सामग्री बांट देनी है तथा उसे सम्भालने के लिए भी जगह नियत कर देना अध्यापक का कार्य है ।

(४) प्रत्येक क्यारी तक पानी पहुंचाने के प्रबन्ध को अध्यापक ने देखना है ।

(५) समय २ पर अध्यापक ने पथ प्रदर्शन करना है कि बालकों ने पनीरी किस तरह लगानी है, कितने दिनों के बाद गोड़ाई करनी है तथा पानी देना है । इसके अतिरिक्त जो फूल किसी अमुक क्यारी में लगाया है उसका चित्र गत्ते पर चिपका कर तथा उस फूल का नाम लिख कर उस क्यारी में टंगाना है ।

(६) प्रत्येक मौसम के फूलों की एल्बम बालकों से बनबानी है और ध्यान रखना है कि बालक सुन्दर लेख में मोटे २ अक्षरों में फूलों का नाम तथा ब्यौरा लिखें ।

(७) एक एल्बम अमुक फूल के पत्तों तथा फूलों की बनानी है और अध्यापक ने लगाने की विधि बनानी है ।

(८) मौसम के मध्य में फूलों को सजा कर लगाने की प्रतियोगिता तथा नुमायश रखकर गांव के सरपंच या अन्य अधिकारी को इनाम बांटने के लिए निमन्त्रित करना चाहिए।

मूल्यांकन :— प्रत्येक मास के पश्चात इस प्रोजैक्ट का मूल्यांकन करना आवश्यक है, यदि पैसों की आवश्यकता हो तो रैड क्रास फंड में से बच्चों की परिषद बीजों व खाद के लिए खर्च किया जा सकता है । क्यारियों की रक्षा के लिए स्थानीय समाज की सहायता ली जा सकती है ।

बालकों को प्रत्येक मौसम के फूलों के नाम तथा उनकी पहचान हो जाए तो यह प्रौजैक्ट सफल माना जा सकता है । प्रौजैक्ट की सफलता बालकों के व्यवहार से जांची जा सकती है कि वह क्यारियों में से किसी फूल को न तोड़ें । क्यारियों में पैर न दें तथा स्कूल की सुन्दरता को नष्ट करने वाले के लिए विद्यार्थी परिषद कोई दंड निर्धारित करे ।